कोशिन-को क्या है?

कोशिन-को (庚申講, *Koshin-ko*) जापान की एक पारंपरिक लोक-प्रथा है।

चीन में उत्पन्न ताओ धर्म के अनुसार, मनुष्य के शरीर में तीन कीड़े रहते हैं — एक सिर में, एक आंतरिक अंगों में और एक शरीर के निचले भाग में। इन तीनों को सानशी (三尸, *sanshi*) कहते हैं।

माना जाता है कि ये सानशी पेट-दर्द, सिर-दर्द और अन्य रोगों का कारण बनते हैं। इतना ही नहीं, हर साठ दिन में एक बार आने वाली कोशिन (庚申) की रात को ये शरीर से निकलकर स्वर्ग को जाते हैं और अपने आश्रयदाता के बुरे कर्मों की शिकायत देवता तेनतेई (天帝, *Tentei*) से करते हैं।

तेनतेई, जिसे मनुष्य की आयु का अधिपति माना जाता है, सानशी की शिकायत सुनकर अपराध की गंभीरता के अनुसार उस व्यक्ति की आयु घटा देता है।

इसे रोकने के लिए लोग कोशिन की रात भर जागते रहते हैं और इस बात पर नज़र रखते हैं कि सानशी शरीर से बाहर न निकल जाएँ। यही प्रथा कोशिन-को कहलाती है।

कोशिन-को आठवीं शताब्दी (नारा काल) में चीन से जापान पहुँची और बारहवीं शताब्दी (हेइआन काल) तक कुलीन वर्ग में खूब प्रचलित रही। सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी (एदो काल) में यह बौद्ध धर्म और शिंतो से जुड़कर आम जनता में भी लोकप्रिय हो गई। आज भी जापान के कोने-कोने में कोशिन-टीले (庚申塚) और कोशिन-स्तंभ (庚申塔) जैसे स्मारक बचे हुए हैं, जो उस समय की समृद्धि की गवाही देते हैं।

तोक्यो कोशिन-दो कोशिन-को का पालन करने वाला और उसके पुनरुद्धार के लिए प्रयत्नशील एक समूह है।

तोक्यो कोशिन-दो (東京庚申堂)

पता: Mukoujima 3-7-4 Sumida-ku, Tokyo

www.koshindo.com